1

“गुमराह और बद अक़ीदह फ़िरक़ों का रद्द ए बलीग़”

मौदूदियत

पर एक नज़र

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

हिंदी तर्जुमा

कलीम रज़वी

“जमात ए इस्लामी के बानी मौदूदी के बातिल नज़रियात पर मुशतमिल एक मुख़्तसर मक़ाला”

पढ़ें और अंधी तक़लीद से बचें

नाशिर

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

पर एक नज़र

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

तर्जुमानिगार:

कलीम रज़वी

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

तर्जुमानिगार के क़लम से

बा फ़ज़्लेही तआला जनाब मौलाना हस्सान रज़ा साहब का पहला तहक़ीक़ी व कामयाब मकाला है अक्सर ओ बेश्तर दुनयावी तालीम हासिल करने वाले स्कूल कॉलेज हॉस्टल में रहने वाले स्टूडेंट्स अरबी और उर्दू ज़ुबान से आशना नहीं इसलिए इस मक़ाले को उर्दू से आम बोलचाल की हिंदुस्तानी ज़ुबान में ट्रांसलेशन किया ताकि बेश्तर लोग इसको पढ़कर अपने ईमान ओ अक़ीदे की हिफाज़त करें अल्लाह तौफ़ीक़ देने वाला है.

मुहम्मद कलीम रज़वी

M.A URDU(LIT)

कलिमात ए तहसीन

अज़ उस्ताज़ ए मुहतरम हाफिज मुहम्मद तौहीद अहमद खान रज़वी साहब क़िब्ला

मुदर्रिस जामिया तहसीनिया जिया उल उलूम बरेली शरीफ

मौलवी हस्सान रज़ा का मज़मून "मौदूदियत पर एक नज़र" का मुताअला किया , माशा अल्लाह बहुत ही अच्छे अंदाज़ से मौलवी हस्सान रज़ा ने मौदूदी के बातिल अक़ाइद ओ नज़रियात की बेख कुनी की है और मौदूदी के अक़ाइद के बतलान को क़ुरआन व हदीस के ज़रिये साबित किया है अल्लाह तबारक व तआला इस को कुबुल फरमाए और हम सब को इस्लाम की सहीह तालीमात पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ अत फरमाए आमीन

इब्तिदा

अहले सुन्नत व जमाअत के मुक़ाबले में इस्लाम की शुरुआत से ही कई बातिल फ़िरक़े अपना सर उठाते रहे और भोली भाली उम्मत ए मुस्लिमा को अपने जाल में फंसाने का काम खूब अच्छे से अंजाम देते रहे , ख़ारजी, राफ्ज़ी , मोताज़िला से लेकर वहाबी देओबंदी तक कई बातिल फ़िरक़ों ने मुस्लिम उम्मत के बहुत से लोगों को बिदअत और गुमराही में डालकर उनके ईमान और अक़ीदे को बर्बाद कर दिया लेकिन जहाँ मक्कार और बातिल परस्त लोग हैं वहीं खुदा तआला उन के मुक़ाबले में अहले हक़ को पैदा फरमाता है और वो हक़ बयान करने वाले आलिम , बतिलों का रद्द करते हैं और उनकी गुमराहियों से पर्दा हटाते हैं और उम्मत ए मुस्लिमा को उन भेढ़िया नुमा इंसानों से बचाकर सीधी और सच्ची राह दिखाकर रहनुमाई करते हैं

बीसवीं सदी के शुरूआती दौर में पैदा होने वाले जिनका नाम अबुल आला मौदूदी था उन्होंने अपने क़लम के ज़रिये क़ुरान , हदीस और अस्लाफ (अहले सुन्नत के बुज़ुर्गों) की तालीम के खिलाफ काम किया और अपने नये नज़रिये उम्मत ए मुस्लिमा के सामने पेश किये और अपनी तंज़ीम जमात ए इस्लामी के नाम से बनायीं इसी के ज़रिये उसके थॉट्स (सोच) को हिन्दुस्तान व पकिस्तान में फलने फूलने का मौक़ा मिला खुदा तआला , अंबिया ए इकराम, सहाबा ए इकराम ,औलिया ए इकराम की मुक़द्दस शान में गुस्ताखियां कीं और मुसलमानों पर शिर्क के फतवे लगाए मोमिनों को मुशरिक क़रार दिया उसके litterature से यूनिवर्सिटी और दुनियावी पढ़े लिखे लोग काफी मुतास्सिर हुए और उन लोगों ने मौदूदी साहब को अपना रहनुमा मानकर उसके बातिल ख़यालात को अपने दिलों में जगह दी

हमने इस ख्याल से इस रिसाले को तस्नीफ़ किया की तहक़ीक़ के ज़रिये मौदूदी साहब के ख्याल और नज़रिये को लोगों के सामने पेश किया जाये ताकि भोली भाली अवाम उसके बातिल नज़रियों से आगाह हो और अपने ईमान को बर्बाद होने से बचाये और उनके litterature को पढ़ने से बचे और अहले सुन्नत व जमाअत के आलिमों बुज़ुर्गों की तालीम को पढ़े उसपर अमल करे और राह ए हक़ के मुसाफिर बन जाये

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

तफ़हीम उल क़ुरआन में खुदा तआला की शान में गुस्ताखी

खुदा तआला की किताब क़ुरआन मजीद को जो लोग खुद न समझ पाए वो लोग मुस्लिम उम्मत को क़ुरआन समझाने निकल पड़े ऐसा ही कुछ मौदूदी साहब ने किया उन्होने अपनी किताब तफ़हीम उल क़ुरआन में कुछ वो चीज़ें भी खुदा की जानिब मंसूब कर दीं जो उसके शान के लाइक नहीं हैं उसकी कुछ मिसालें आपके सामने पेश कर रहा हूँ

तफ़हीम उल क़ुरआन की कुछ मिसालें

1. अल्लाह उन से मज़ाक़ कर रहा है (सूरह बक़रह, 15)
2. अल्लाह उन मज़ाक़ उढ़ाने वालों का मज़ाक़ उड़ाता है और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है (सूरह तौबा, 79)
3. क्या ये लोग अल्लाह की चाल बे खौफ हैं ? हालांकि अल्लाह की चाल से वही क़ौम बे खौफ होती है जो तबाह होने वाली है (सूरह आराफ़, 99)
4. वो अपनी चालें चाल रहे थे और अल्लाह अपनी चाल चल रहा था और अल्लाह सबसे बेहतरीन चाल चलने वाला है (सूरह अनफाल, 30)

मज़ाक़ करना और चाल चलना ये इंसानी कारनामे हैं और कई बार इंसान में भी ये नुक़्स समझे जाते हैं यकीकन खुदा ए तआला की ज़ात इससे पाक है
चाल चलना ज़्यादातर बुरे मायने में इस्तेमाल क्या जाता है तो लाज़िम था कि इन मायनों को इस्तेमाल करने से बचा जाये लेकिन मौदूदी साहब को ये अलफ़ाज़ खुदा ए तआला के लिए इस्तेमाल करने में ज़रा भी शर्म नहीं आयी
और शर्म भी क्यों आये क्यूंकि इनको भी तो अपने बाप, दादा मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजदी और इस्माईल देहलवी के क़दमों पर क़दम रखना था

खुदा तआला की ज़ात हर ऐब से पाक है

इमाम इब्ने शरीफ ने फ़रमाया हर वो सिफ़त उसके लिए मुहाल है जिसमे न कमाल हो और न नुकसान इसलिए कि सिफ़ात ए खुदाबंदी में से हर सिफत, सिफत ए कमालिया है, नेज़ इसी में है अशाएरा के दरमियान इस बारे में इख्तिलाफ नहीं के वो वस्फ़ जो बन्दों के हक़ में वस्फ़ ए नुक़्स हों खुदा तआला उस से मुनज़्ज़ा है (अल मुसामरह फी शरह मुसायरह)
(यानी अल्लाह तआला की हर सिफ़त अपने कमाल पर है तो उसकी तरफ ऐसी सिफ़त को मंसूब करना मना है जिसमे न कमाल हो और न कोई नुकसान हो क्यूंकि अल्लाह तआला इन तमाम चीज़ों से पाक ओ साफ़ है
इस इबारत का मतलब आप बखूबी समझ गए होंगे यानी वो लफ्ज़ जिसमे न कोई कमाल हो और न कोई नुकसान वो भी खुदा तआला के लिए बोलना जाइज़ नहीं तो वो लफ्ज़ खुदा तआला की ज़ात के बारे में कैसे बोले जा सकते हैं जिन में नुक़्स और ऐब पाया जाता हो
ये हैं जनाब इस्लामी निज़ाम को क़ायम करने का ख्वाब देखने वाले मौदूदी साहब जिन्होने क़ुरान ए पाक का गलत तर्जुमा करके लोगों को नया नज़रिया देने और अस्लाफ की तालीम से हटकर काम किया जिन्होने एक तरफ "अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकढ़ लो और फ़िरक़ों में न बटो" का नारा भी लगाया और दूसरी तरफ नए नज़रियात के नाम पर उम्मत ए मुस्लिमा के टुकड़े किये

न तुम सदमे हमें देते न हम फरियाद यूँ करते
न खुलते राज़ ए सर बस्ता न यूँ रुस्वाइयाँ होतीं

अंबिया इकराम(नबियों) की शान में तौहीन

जिस शख्स ने खुदा की शान में में गुस्ताखियां की हों भला उस से कैसे उम्मीद की जा सकती है के वो नबियों की शान को मानेगा मौदूदी साहब ने अंबिया इकराम की शान में गुस्ताखियां कीं जिस की कुछ मिसालें हम आपके सामने पेश करते हैं
हज़रात इब्राहीम अलेह सलाम जिन्हे खुदा तआला ने अपना खलील बनाकर दुनिया में भेजा मौदूदी साहब ने आप के बारे में कुछ यूँ लिखा
"इस सिलसिले में एक और सवाल भी पैदा होता है वो ये कि जब इब्राहीम ने तारे को देखकर कहा ये मेरा रब है और जब चाँद और सूरज को देखकर उन्हें अपना रब कहा तो क्या उस वक़्त आरज़ी तौर पर ही सही वो शिर्क में मुब्तिला न हो गए थे (तफ़हीम उल क़ुरआन जिल्द 2)
हज़रत मूसा अलेह सलाम के बारे में लिखा
नबी होने से पहले हज़रत मूसा अलेह सलाम से भी एक बहुत बढ़ा गुनाह हो गया था कि उन्होंने एक इंसान को क़त्ल कर दिया था (रसाइल ओ मसाइल हिस्सा 1)

पूरी तफ़हीम उल क़ुरआन अँबियाँ कि गुस्ताखियों से भरी हुई है यहाँ सिर्फ दो ही मिसालें पेश कि गयी हैं अब आप खुद फैसला कर सकते हैं कि जो अल्लाह और उसके अंबिया कि शान में गुस्ताखियां करे वो मुसलमानों को सच्चा रहनुमा हो सकता है,वो मुसलमानों का रहनुमा क्या खुद भी मुस्लमान नहीं जो खुदा और उसके नबियों कि शान में तौहीन करे, अपनी राय से क़ुरआन का तर्जुमा और तफ़्सीर करने वाले ऐसे ही लोगों ने उम्मत ए मुस्लिमा को तरह तरह के फ़िरक़ों में बाँट दिया खुदा तआला उम्मत ए मुस्लिमा को अपनी पनाह में रखे

इस्मत ए अंबिया के ताल्लुक़ से शिफा शरीफ की एक इबारत

क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलेह फरमाते हैं
तमाम बाक़ियात और हालात जो अंबिया ए इकराम के बारे में या खुद उन ही से नक़्ल किये गए हैं इस बात के शाहिद हैं के पैदाइश के वक़्त से ये सब हज़रात तमाम नक़ाइस से पाक होते हैं ये हज़रात न सिर्फ तौहीद ए इलाही और अल्लाह पर ईमान के साथ परवरिश हासिल करते हैं बल्कि मआरिफ़ और अनवार की बारिशों में उन की नशोनुमा होती है (शिफा शरीफ)
क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलेह तो लिख रहे हैं के अंबिया ए इकराम बचपन से ही तमाम बुरे कामों से दूर होते हैं और किसी तरह की अख़लाक़ी कमज़ोरी के मुर्तकिब नहीं होते लेकिन मौदूदी साहब ने पता नहीं कहाँ से तहक़ीक़ की और अंबिया इकराम की मुक़द्दस ज़वात के ताल्लुक़ से अपनी गन्दी सोच को ज़ाहिर कर दिया या तो ये उल्माए यहूद की तरह टकों की खातिर फिरंगियों के हाथों पर अपना दीन बेचने का नतीजा था या फिर उसकी अक़्ल पर परदे पड़े हुए थे जिसकी वजह से उसे हक़ नज़र नहीं आ रहा था

सहाबा इकराम के बारे में मौदूदी साहब के कुछ बेहूदा नज़रिये

सहाबा इकराम की जमाअत बड़ी फ़ज़ीलतों की हामिल है
उन के ताल्लुक़ से भी मौदूदी साहब ने अपने गढ़े हुए नज़रियात का इज़हार कुछ यूँ किया है

1. **चुनाचे ये यहूदी अख़लाक़ का ही असर था की मदीना में बाज़ अंसार अपने मुहाजिर भाईओ की खातिर अपनी बीबियों को तलाक़ देकर उनसे बियाह देने पर आमादा हो गए थे** (तफ़हीमात)
2. **सहाबा इकराम जिहाद फी सबीलिल्लाह की असल स्परिट समझने में बराबर गलतियां कर जाते थे**
(तर्जुमा नुल क़ुरआन)

सहाबा इकराम की ज़ात ए मुक़द्दस पर यहूदी अख़लाक़ से मुतास्सिर होने की तोहमत लगाने वाले मौदूदी साहब को शर्म आनी चाहिए थी कि किस जमाअत कि तौहीन कर रहे हैं? जिस जमाअत के बारे में क़ुरान खुद गवाह है

और उन सब (सहाबा) से अल्लाह जन्नत का वादा फरमा चुका (सूरह हदीद, 10)

और जिस जमाअत के बारे में हुज़ूर नबी ए करीम ने खुद इरशाद फ़रमाया हो

मेरे सहाबा सितारों कि मानिंद हैं उनमे से जिसकी पैरवी करोगे हिदायत पा जाओगे (शिफा शरीफ)

क़ुरआन ए करीम और हदीस ए पाक में इतने फ़ज़ाइल आने के बावजुद मौदूदी साहब ने सहाबा इकराम को जिहाद फी सबीलिल्लाह के समझने में गलती करने वाला लिखा

शिफा शरीफ में क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलेह ने एक हदीस शरीफ नक़ल कि है वो ये है

हुज़ूर नबी ए करीम ने फ़रमाया सहाबा इकराम के बारे में खुदा का खौफ रखो और खुदा से डरो और मेरे बाद उन्हें मलामत का निशाना न बनाना जिसने सहाबा से मुहब्बत रखी उसने मेरी वजह से उनसे मुहब्बत की और जिसने उन हज़रात से अदावत रखी उसने मेरी ज़ात से अदावत की जिसने सहाबा को तकलीफ दी उसने मुझे तकलीफ पहुचायी जिसने मुझे तकलीफ दी उसने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को तकलीफ पहुचायी और अल्लाह को तकलीफ देने वाला बहुत जल्द उसकी पकड़ में आ जायेगा

(शिफा शरीफ)

क़रीब है यारों रोज़ ए महशर छुपेगा कुश्तों का खून क्यूँकर
जो चुप रहेगी ज़ुबान ए खंजर लहू पुकारेगा आस्तीं का

मौदूदी साहब के मुतफ़र्रिक़ बातिल अक़ीदे

आपके सामने कुछ बातिल अक़ीदों को पेश कर रहे हैं
जिनो पढ़ कर आप खुद गौरओ फ़िक्र करें कि दीन ए इस्लाम का इन अक़ाइद ए बातिल से कोई ताल्लुक़ नहीं है

1. मुता को मुतलक़न हराम क़रार देने या मुतलक़न मुबाह ठहराने में सुन्नियों और शियों के दरमियान जो इख़्तिलाफ पाया जाता है उसमे बहस और मुनाज़रा ने बेजा शिद्दत पैदा करदी है वरना अम्र ए हक़ मालूम करना मुश्किल नहीं है इंसान को बाज़ औक़ात ऐसे हालात से साबिक़ा पेश आ जाता है जिसमे निकाह करना मुमकिन नहीं होता और वो ज़िना या मुता में किसी एक को करने पर मजबूर हो जाता है ऐसे में ज़िना कि बनिस्बत मुता कर लेना बेहतर है (तर्जुमा नुल क़ुरआन)

2. काना दज्जाल वगैरह तो महज़ अफ़साने हैं जिनकी कोई शरई हैसियत नहीं वो दरअसल आप के क़यासात हैं जिनके बारे में आप खुद शक में थे लेकिन क्या साढ़े तेरह सौ बरस की तारिख ने ये साबित नहीं कर दिया कि हुज़ूर का ये अंदेशा सही न था (तर्जुमा नुल क़ुरआन)

3. हयात ए मसीह और रफा इलस समा (यानी ईसा अलेह सलाम का ज़िंदा होना और आसमान पर उठाया जाना) क़तई तौर पर साबित नहीं (नवाए ए पाकिस्तान 1955)
4. ये बुखारी शरीफ का बुत कब तक बगल में दवाये फिरोगे (फितना ए मौदूदियत)
5.मेरी राय ये है कि दाढ़ी इतनी होनी चाहिए कि दूर से नज़र आये
(मौदूदी साहब अपने अफ़कार ओ ख़यालात के आईने में)
6. अमीर ए जमाअत या अपने मक़ामी अमीर के अहकाम व मंशा से बे एतनायी बरतना वैसा ही गुनाह है जैसा कि खुदा और रसूल के अहकाम व मंशा से बे एतेनाई बरतने का गुनाह होता है
(इंकिशाफ़ात)

ज़रा सोचो तो सही

मआज़अल्लाह ! आपने ये मुख़्तसर मकाला मौदूदी के बातिल अक़ाइद के बारे में पढ़ा मैं समझता हूँ के आप मौदूदी के नज़रियात से अच्छी तरह वाक़िफ़ हो चुके होंगे और मौदूदी के दीन ए इस्लाम से मुँह फेरने से भी आगाह हो चुके होंगे अब बात सिर्फ इतनी है कि जब सब कुछ ज़ाहिर हो चुका तो मौदूदी के धरम को अपनाने वाले और उसके जैसे नज़रियात रखने वाले ज़रा सोचें कि अब भी उसकी मुहब्बत के लिए दिल का कोई गोशा खाली बंदा रखना मुमकिन होगा ? क्या अब भी हम उसे अपनी अफ़कार और नज़रियात का अमीर मानेंगे ? क्या अब भी मौदूद परस्ती मुआशरे में फैलाने की कोशिश करेंगे ? नहीं हरगिज़ नहीं , जो इस्लाम को सच्चा दीन मानता होगा ,जो अल्लाह का बंदा होगा अपने नफ़्स का न होगा वो हरगिज़ मौदूदियत को अपने दिल में जगह नहीं देगा दुनयावी तालीम में मशरूफ लोगों से कहना चाहुंगा कि शरीयत को अपनी अक़्ल से समझना हिमाकत है शरीअत वही है जो खुदा ए तआला और उसके रसूल ने हमें अवामिर और नवाही के तौर पर अता की है (यानी हमें क्या करना है और क्या नहीं करना है ये तमाम चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल के अहकाम से साबित हैं) क्या सही है क्या गलत ? ये हमारे इस्लाम ने बता दिया और अस्लाफ ए अहले सुन्नत ने इस तालीमात को हम तक पहुँचाया लेकिन मौदूदी साहब ने अपने नज़रियात लाकर अंबिया औलिया उलमा ए अहले सुन्नत पर अपनी नफ़्सानी ख्वाहिशात की बिना पर तनक़ीद की और उम्मत ए मुस्लिमा को अपने नज़रियात देकर गुमराह किया इस लिए पढ़ने वालों से गुज़ारिश है के इंसाफ से काम लें उल्माए अहले सुन्नत की किताबें पढ़ें हक़ कब का ज़ाहिर हो चुका अगर अब भी हम आँखे मूंदकर हर किसी को अपना रहनुमा तस्लीम करलें तो इस से बढ़कर बे गैरती की बात और क्या हो सकती है , याद रखो जन्नत में जाने वाली सिर्फ एक जमाअत है जिसे अहले सुन्नत व जमाअत कहते हैं जो शख़्स कहता है के किसी को गलत नहीं कहना चाहिए सब फ़िरक़े बराबर हैं ये जुमला खुद क़ुरान ओ हदीस की तालीमात के खिलाफ है जो लोग ऐसे जुमले बोलते हैं उन्होने अभी ठीक से क़ुरान ओ हदीस का मुताअला नहीं किया है बल्कि वो उन की सोच की पैदावार है

दो रंगी छोड़ दे, एक रंग हो जा
सरासर मोम हो जा,या संग हो जा

मकाला इख़्तिताम पज़ीर है अल्लाह से दुआ है जो लोग भी मौदूदियत से मुतास्सिर हो गए हैं उन्हें हिदायत अता फरमा और अहले सुन्नत व जमाअत पर गामज़न फरमा , अल्लाह हमारा हामी और नासिर हो

16 शाबान 1441 मुताबिक़ 11 अप्रैल 2020 बरोज़ हफ्ता